Semester-IV

CC-9

प्रश्नः वर्ड्सवर्थ के काव्य-भाषा संबंधी विचारों की समीक्षा कीजिए।

उत्तरः विलियम वर्ड्सवर्थ की गणना 19वीं शताब्दी के प्रमुख समीक्षकों में की जाती है। उनके काव्य-भाषा संबंधी विचार उनके काव्य-संग्रह 'Lyrical Ballads' के द्वितीय संस्करण की भूमिका (1800ई०) में प्रकाशित हुए।

वर्ड्सवर्थ से पूर्व काव्य-शैली के कुछ नियम निर्धारित किये जा चुके थे, काव्य-भाषा की शब्दावली निश्चित की गयी थी और उसमें से निम्न तथा साधारण शब्दों का बहिष्कार किया गया था। परंतु वर्ड्सवर्थ को विशिष्ट काव्यगत उक्तियाँ, — मानवीकरण, वक्रोक्ति, विपर्यय तथा वैषम्य रुचिकर न थे। वे वस्तुपरिगणन प्रणाली के भी विरोधी थे। पौराणिक देवभाव तथा

Teacher's Signature

PAGE NO:
DATE:

भावभास (Pathetic fallacy) भी, यदि वे अनावश्यक रूप में ठूँसी गयी हों, उन्हें आकृष्ट नहीं कर पाती थीं। उन्होंने 17वीं शताब्दी की शैलीगत विशेषताओं — विलक्षणता, दूरारूढ़ कल्पना, अतिशयोक्ति, शाब्दिक चमत्कार तथा अस्पष्टता की भी आलोचना की।

उन्होंने काव्य से कृत्रिमता दूर करने के लिए सरलता पर बल दिया, क्योंकि उनके समय में अलंकृत भाषा का यांत्रिक अनुकरण हो रहा था। उनका मत था कि सरल और ग्रामीण जीवन से यदि विषय चुने जायेंगे तो भाषा स्वयं सरल हो जायेगी।

वर्ड्सवर्थ ने काव्य-भाषा के संबंध में लिखा था कि वह जनसाधारण की भाषा हो। उन्होंने कहा कि छंदबद्ध रचना तथा गद्य की भाषा में न तो कोई तात्विक अंतर रहता है और न हो सकता है।

पर प्रश्न है कि जनसाधारण की भाषा से उनका क्या तात्पर्य था? क्या उनका अभिप्राय ग्राम्य भाषा (rustic language) से था? इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि आरंभ में भले रहा हो, पर बाद में नहीं। जब वे कहते हैं कि भाषा "Selection of m

Teacher's Signature

real language of men (मनुष्यों की वास्तविक भाषा) चुनी हुई होनी चाहिए, तो 'selection' शब्द के द्वारा वे स्पष्ट कर देते हैं कि ग्राम्य भाषा का व्यवहार काव्य में ज्यों-का-त्यों न किया जाय, बल्कि उसका चुनाव होना चाहिए। वे चाहते थे कि अभिव्यक्ति सरल, सीधी और आडंबरहीन होनी चाहिए और वह पाठक के हृदय में अरुचि और वितृष्णा पैदा न करे। उनका भाषा के संबंध में मत था कि वह ऐसी होनी चाहिए जो सबकी समझ में आ जाए, जो हृदय के तीव्र भावों को अभिव्यक्त करने में समर्थ हो, जिसमें आडंबर न हो।

वास्तव में उनका भाषा-शैली संबंधी मत उनके काव्य-संबंधी विचारों से घनिष्ठ रूप से संबद्ध है। वे कविता को तीव्रतर भावनाओं का सहज उच्छलन (spontaneous overflow of powerful feelings) मानते
पृ० और यह मानते हैं कि भावोच्छलन के समय भाषा हृदय से निकलती है। जिस प्रकार चिंतन की प्रक्रिया से कवि का मन और व्यक्तित्व इतना परिष्कृत हो जाता है कि उसका सहज भावावेग उच्चस्तर का और प्राणवान तथा ऊर्जस्वित होता है, उसी प्रकार चिन्तन तथा विवेकपूर्ण

Scanned by CamScanner

चुनाव से भाषा गौरवमंडित, सजीव और सप्राण हो जाती है। वे भावोच्छ्वलन के पक्ष में तो हैं, उन्हें जो भावोच्छ्वलन अभीष्ट है, वह किसी लापरवाह या विवेकहीन व्यक्ति का भावोच्छ्वलन न होकर विचारवान व्यक्ति का भावोच्छ्वलन है।

अलंकार के संबंध में वर्ड्सवर्थ का विचार है कि भाव-तीव्रता के क्षणों में जो अलंकृति काव्य-भाषा में आ जाती है, वह कृत्रिम नहीं होती, अतः उसका अभिनंदन होना चाहिए। वे स्वयं अलंकार का संबंध तीव्र भावावेग से जोड़ते हैं और उसे काव्य में ग्रहण करने की स्वीकृति देते हैं।

उनकी दृष्टि में सच्ची भाषा वह है, जो मनुष्य भावावेग (Passion) के क्षणों में बोलता है। कवि जितना ऐसी भाषा के निकट पहुँच सकेगा उसकी भाषा-शैली उतनी ही सच्ची मानी जाएगी।

वर्ड्सवर्थ की भाषा-विषयक उपर्युक्त मान्यता को उनके ही जीवनकाल में स्वीकार नहीं किया जा सका। उनके मित्र और सह-लेखक कॉलरिज तक ने उनकी मान्यताओं का खंडन किया। उ

वर्ड्सवर्थ का यह मत स्वीकार नहीं हुआ कि काव्य तथा सामान्य ग्राम-जीवन से अंतरंग संबंध है और काव्य-भाषा तथा सामान्य जन-भाषा में कोई मौलिक अंतर नहीं है। वर्ड्सवर्थ के यह विचार कि काव्य-भाषा और गद्य की भाषा में कोई तात्विक भेद नहीं होता, कॉलरिज को अमान्य है। उन्होंने वर्ड्सवर्थ की मान्यताओं का खंडन किया।

कॉलरिज बोलचाल की सामान्य भाषा के काव्य में प्रयोग के पक्ष में नहीं थे। वर्ड्सवर्थ के विपरीत कॉलरिज गद्य तथा पद्य की भाषा में स्पष्ट अंतर मानते हैं और उसका पार्थक्य छंद के कारण बताते हुए कहते हैं - "I write in metre, because I am about to use a language different from that a prose."

वस्तुतः वर्ड्सवर्थ का उद्देश्य कृत्रिम भाषा-शैली का बहिष्कार करना था, पर उन्होंने इसको आवश्यकता से अधिक तूल देकर यह घोषणा की कि वह सामान्य और ग्रामीण थे। स्पष्ट है कि उनका यह मत न तो उचित था और न व्यावहारिक ही। वर्ड्सवर्थ की देन

Scanned by CamScanner

PAGE NO:

DATE:

इस बात में है कि उन्होंने कृत्रिम वागाडंबर के विरुद्ध आवाज उठायी और काव्य-भाषा के निर्बंध में एक नयी दृष्टि प्रदान की।

वर्ड्सवर्थ की काव्य-भाषा निर्बंधी अवधारणा की जो आलोचना की गयी है, वह न्याय-संगत नहीं है, क्योंकि उन्होंने कविता में मुख्य चीज कवि की अनुभूति को माना है, भाषा का स्थान बाद में आता है। मुख्य वे अनुभूति और अभिव्यक्ति की पारस्परिक अनुरूपता पर बल देते हैं, जो आज भी स्वीकार्य है।

निष्कर्ष — निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वर्ड्सवर्थ ने काव्य-भाषा को यथासंभव (as far as possible) सामान्य जन की भाषा बनाने की बात कही है तथा चयन (selection of language) पर भी बल दिया है। आवश्यकता पड़ने पर ग्रामीण भाषा से बाहर जाने की बात भी वे मानते हैं। जब वे तीव्र अनुभूति की दशा में भाषा के स्वरूप बदलने की बात कहते हैं, तो उनका अभिप्राय केवल यह होता है कि तीव्रानुभूति के क्षणों में भाषा स्वतः अत्यंत शक्तिशाली और जीवंत हो उठती है। यह बात कॉलरिज भी मानते हैं। अतः उनकी काव्य-भाषा निर्बंधी अवधारणा पूर्णतः दोषपूर्ण नहीं है, जैसा कि कॉलरिज तथा अन्य आलोचकों ने [illegible]

Teacher's Signature